प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी हार मानने में निहित है। सफल होने का तरीका हमेशा एक बार और प्रयास करना है।
-थॉमस ए. एडीसन

अमेरिकी वैज्ञानिक

इस साल सीआईएससीई 12वीं की परीक्षा में दो बच्चों ने सौ फीसदी अंक हासिल कर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, तो वहीं तेलंगाना में विभिन्न परीक्षाओं में नाकाम रहे बीस से अधिक विद्यार्थियों की खुदकुशी शिक्षा प्रणाली के विरोधाभास को ही दिखाती है।

सौ में सौ

पिछले कुछ वर्षों से 12 वीं और दसवीं बोर्ड की परीक्षाओं में नब्बे फीसदी से अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या में लगातार हो रही बढ़ोतरी की कई तरह से व्याख्या की जा सकती है, लेकिन इससे असहमत नहीं हुआ जा सकता कि बच्चे अपनी प्रतिभा और मेहनत के दम पर अंकों की किसी भी तरह की चुनौती का सामना करने में पीछे नहीं हैं। इस साल सीआईएससीई की 12वीं (आईएससी) की परीक्षा में कोलकाता के देवांग कुमार और बंगलुरू की विभा स्वामीनाथन ने सौ फीसदी अंक हासिल कर अपना लोहा मनवाया है। केंद्रीय या राज्यों के किसी बोर्ड में पहले कभी ऐसा नहीं हुआ कि 12 वीं की परीक्षा में किसी बच्चे को हर विषय में सौ में सौ अंक मिले हों। इससे पहले सीबीएसई की बारहवीं की परीक्षा में इसी साल दो बच्चों ने पांच सौ में 499 अंक हासिल किए थे और कमाल यह है कि शीर्ष तीन स्थानों पर एक-एक अंक के अंतर से 23 बच्चे आए! यही नहीं, 94,299 बच्चों ने 90 फीसदी से अधिक अंक हासिल किए, वहीं सीबीएसई की दसवीं की परीक्षा में दो लाख तीस हजार बच्चों ने 90 फीसदी से अधिक अंक हासिल किए। इन नतीजों को देखकर लगता है, मानो विद्यार्थियों ने परीक्षक के सामने ही चुनौती रख दी है कि, देखें कैसे एक अंक भी काटते हो! वहीं अंकों की इस होड़ के दूसरे पक्ष पर भी विचार करने की जरूरत है, क्योंकि 12 वीं और दसवीं की परीक्षाओं में नाकाम रहने वाले अनेक बच्चों के खुदकुशी कर लेने की खबरें भी आ रही हैं। अकेले तेलंगाना में इस वर्ष विभिन्न बोर्ड परीक्षाओं में नाकाम रहने वाले बीस से अधिक बच्चे खुदकुशी कर चुके हैं, जो हमारी शिक्षा व्यवस्था के विरोधाभास को ही दिखाता है। मुश्किल यह है कि अधिक अंक प्राप्त करने के बावजूद बच्चे आश्वस्त नहीं हो पाते कि उन्हें उनकी पसंद के कॉलेज में दाखिला मिल पाएगा। इसका सबसे बड़ा उदाहरण दिल्ली विश्वविद्यालय है, जहां पिछले कुछ वर्षों से कई प्रसिद्ध कॉलेजों में कट ऑफ सौ फीसदी तक चली जा रही है! असल में जितनी संख्या में विद्यार्थी 12 वीं पढ़कर आ रहे हैं, उस अनुपात में उच्च शिक्षा के अच्छे संस्थान नहीं हैं, इसी वजह से बच्चों में अंकों की होड़ बढ़ रही। शिक्षा में बढ़ते इस असंतुलन को दूर करने के लिए व्यापक स्तर पर पहल की जरूरत है और यह तब संभव होगा जब यह राजनीतिक वर्ग की चिंता में शामिल हो।

जलवायु परिवर्तन की जद में

संयुक्त राष्ट्र को सौंपी गई ताजा रिपोर्ट के मुताबिक बांग्लादेश और भारत में चार हजार वर्ग मील में फैले सुंदरवन में जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के कारण बंगाल टाइगर के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

काई शुल्ज

वैज्ञानिकों ने एक नए अध्ययन में चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन और समुद्र का बढ़ता जल स्तर अंततः बाघों के दुनिया के आखिरी और सबसे बड़े प्राकृतिक निवास को खत्म कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र को सोमवार को सौंपी गई इस रिपोर्ट के मुताबिक बाघ जमीन पर निवास करने वाली तकरीबन पांच लाख प्रजातियों में से एक है, जिनका अस्तित्व उनके प्राकृतिक निवास को मिल रही चुनौती के कारण खतरे में है।

बांग्लादेश और भारत में चार हजार वर्ग मील दलदली जमीन पर फैले सुंदरवन में दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव (उष्णकटिबंधीय) जंगल और समृद्ध पारिस्थितिकी है, जिससे सैकड़ों पशु प्रजातियों को जीवन मिलता है, जिनमें दुर्लभ बंगाल टाइगर भी शामिल है। लेकिन यहां की 70 फीसदी जमीन समुद्र सतह से सिर्फ कुछ फीट ऊपर ही है और इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन का व्यापक असर हो सकता है। ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश के शोधार्थियों ने साइंस पत्रिका *द टोटल एन्वायरमेंट* में प्रकाशित शोध में यह आशंका जताई है।

इन दोनों देशों के दस शोधार्थियों द्वारा तैयार इस रिपोर्ट के मुताबिक तपते ग्रह के कारण हो रहे परिवर्तन से वहां बचे कुछ सौ बंगाल टाइगर का अस्तित्व खत्म हो सकता है। उनका निष्कर्ष है कि 2070 तक बांग्लादेश की तरफ सुंदरवन में बाघों के लिए कोई उपयुक्त निवास नहीं बचा होगा। यह शोध पत्र इंटरगवर्मेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) द्वारा दर्शाए गए जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य पर आधारित है और यह सुदंबरबन में वन्यजीवों के अस्तित्व को लेकर किए गए मौजूदा अध्ययनों के अनुमानों को ही पुष्ट करता है। वर्ष 2010 में वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर के नेतृत्व में किए गए एक अध्ययन में अनुमान व्यक्त किया गया था कि समुद्र सतह में महज 11 इंच की वृद्धि सुंदरवन में कुछ दशकों के भीतर ही बाघों की संख्या में 96 फीसदी तक कमी कर सकती है। हाल के एक अध्ययन में पाया गया कि जलवायु परिवर्तन ने दुनिया के तकरीबन आधे दुर्लभ स्तनधारियों को पहले के अनुमानों से कहीं अधिक नुकसान पहुंचाया है।

सुंदरवन पर नई रिपोर्ट तैयार करने वाली टीम के प्रमुख शरीफ ए मुकुल और उनके सहयोगियों ने समुद्र सतह के स्तर में बढ़ोतरी से परे जाकर बाघों के अस्तित्व को मिल रही चुनौतियों का अध्ययन किया। समुद्र सतह में वृद्धि से 2050 से 2070 के बीच बाघों के निवास में 5.4 फीसदी से 11.3 फीसदी तक कमी होने का अनुमान है। शोधकर्ताओं ने पाया कि जलवायु परिवर्तन के अन्य कारक सुंदरवन के बाघों के लिए कहीं अधिक खतरनाक हैं। गौर करने लायक है कि सुंदरवन दुनिया में बाघों का सबसे बड़ा निवास है।

1900 के दशक की शुरुआत से अब तक आवास के ह्रास, शिकार और वन्य पशु के अंगों के अवैध कारोबार के कारण बाघों की वैश्विक आबादी एक लाख से घटकर चार हजार के आसपास रह गई है।

अध्ययन के मुताबिक बांग्लादेश सुंदरवन में मौसम की चरम घटनाओं में जरा-सी वृद्धि और बदलती वनस्पतियां बाघों की संख्या में और कमी ला देगी। और सुंदरवन में आने वाली बाढ़ से मनुष्यों और बाघों का टकराव बढ़ सकता है, क्योंकि बाढ़ के कारण जानवर सुरक्षित जगह की तलाश में अपने निवास से बाहर भटकते हैं। ढाका की एक यूनिवर्सिटी में पर्यावरण प्रबंधन के सहायक प्राध्यापक मुकुल कहते हैं कि संभवतः ढेर सारी घटनाएं हो सकती हैं। यदि वहां कोई चक्रवात आ जाए या फिर उस क्षेत्र में कोई बीमारी फैल जाए या फिर भोजन की कमी हो जाए तो स्थिति और बिगड़ सकती है। पिछले वर्ष अक्तूबर में संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैज्ञानिक समूह ने अपनी महत्वपूर्ण रिपोर्ट में कहा था कि यदि ग्रीनहाउस गैसों का मौजूदा दर से उत्सर्जन जारी रहता है, तो धरती का तापमान 2040 तक औद्योगिक युग की तुलना में 2.7 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ जाएगा। तापमान में इस वृद्धि का खाद्य शृंखला, प्रवाल भित्ति और बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों पर व्यापक असर हो सकता है।

यह अनुपातहीन तरीके से बांग्लादेश जैसे गरीब और सघन रूप से बसे देश पर व्यापक असर डाल सकती है, जिसका आकार तो अमेरिका के एक छोटे राज्य आयोवा जैसा है, लेकिन जहां 16 करोड़ लोग रहते हैं।

दशकों के ज्वारीय रिकॉर्ड के एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने पाया था कि नदियों तथा नहरों के जटिल संजाल में गंगा डेल्टा में बसे बांग्लादेश में वैश्विक औसत की तुलना में उच्च ज्वार बहुत तेजी से बढ़ रहा था। जाधवपुर यूनिवर्सिटी में समुद्रविज्ञानी सुगाता हाजरा कहते हैं कि सुंदरबन में जमीन का कुछ नुकसान हो सकता है, लेकिन उनका अध्ययन बाघों पर कम नाटकीय प्रभाव पड़ने का संकेत देता है।

बांग्लादेश के वन विभाग के अधिकारी जहीरुद्दीन अहमद कहते हैं कि निचले क्षेत्रों और वहां बसने वाले बाघों को बचाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। वह कहते हैं कि ऐसी फसलें लगाई जा रही हैं जो उच्च लवणयुक्त पानी में पैदा हो सकें। तलछट पुनर्वितरण ने भी स्वाभाविक रूप से कुछ द्वीपों की ऊंचाई बढ़ाई है। '*द वैनिशिंगः इंडियाज वाइल्डलाइफ क्राइसिस*' की लेखक प्रेरणा बिंद्रा कहती हैं कि बाघों का निवास लगातार सिकुड़ता जा रहा है, फिर चाहे वह जलवायु परिवर्तन के कारण हो या औद्योगिक विकास के कारण, और उनके संरक्षण के अच्छे विकल्प नहीं तलाशे जा रहे हैं। उनके मुताबिक बंगाल टाइगर को बाघों के किसी अन्य रिजर्व में स्थानांतरित किया जाना कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है। आखिर आप इन बाघों को कहां रखेंगे? कोलाहल और भीड़ से भरे इस ग्रह में आखिर कहां उपयुक्त जगहें बची हैं?

-साथ में हरि कुमार

© The New York Times 2019

अंतर्ध्वनि

>> विद्यानिवास मिश्र

जिंदगी में नीम को घुसने न देना ही मेरी एकमेव कामना है

वैशाख के महीने में कुछ ही लोग आनंदोत्सव मना पाते हैं, क्योंकि धूप तेज होते-होते महुआ अपना समस्त रस टपका के पात-पात रह जाता है, कोयल की कूक के मंद पड़ते ही अपनी मंजरी डालता है और वसंत के स्वागत में उमगने वाले फूल अपना रस मधुछत्तों में समर्पित कर मुरझा जाते हैं, पर चिलचिलाती धूप और हहकारती लू में नीम झूम उठता है। वैसे मैं नीम से युगों-युगों से परिचित हूं, पर मेरा इससे समझौता नहीं हो पाया, आयुर्वेद की सारी शिक्षाएं और प्रकृति के चिकित्सा के समस्त ठ या ख या न असफल रहे हैं।

बबूल की दातून मुझे भली लगती है, पर नीम की तिताई अभी तक सहन नहीं हो सकी। न जाने कितनी बार आंखें करुआ आई हैं, जीभ लोढ़ा हो गई है, कान झनझना उठे हैं और मन तिता गया है, पर तब भी इस नीम से भी अधिक तीती दुनिया से मैं तीता न हो सका। मेरे बाबा कहा करते, प्रातः इमली का दर्शन बड़ा अशुभ होता है और जिस घर के आगे इमली का पेड़ लग जाए, वह निर्वंश हो जाता है। शुभ-अशुभ वंश-निर्वंश तो मैं नहीं जानता, इतना जातना हूं कि इमली का अमलोन पत्तियों की स्मृति अब भी मुंह में पानी भर देती है और अधपकी बलुही इमली की फली मिल जाए, तो मैं अब भी गुलाब-जामुन को तलाक दे सकता हूं। नीम में क्या मिलता है, गंध असह्य, स्वाद असह्य, यहां तक कुसुमित नीम का रूप भी असह्य। इसलिए आम में फल न आए, महुए में कूंचे न लगें, गुलाब में कली न आए और मधुमास सूना चला जाए, पर नीम बराबर फूलेगा, बराबर फरेगा और इतना फरेगा कि अकुला देगा मृत्यु के स्पर्श से डरने वाले नीम की पत्ती चबाते हैं, चबाते रहेंगे, इस नश्वर शरीर से मोह करने वाले नीम के नीचे छंहाते हैं, छंहाते रहेंगे और शीतल के उपासक नीम की डाली चढ़ाते है, चढ़ाते रहेंगे, पर मैंने कसम खाई है जिंदगी की, और जिंदगी में नीम को घुसने न देना मेरी एकमेव कामना है।

-प्रसिद्ध साहित्यकार।

मंजिलें और भी हैं

>> अजय ओली

पदयात्रा कर बच्चों को भीख मांगने से रोक रहा हूं

मैं उत्तराखंड के पिथौरागढ़ का रहने वाला हूं। मेरा इवेंट मैनेजमेंट का बिजनेस था, जिसका टर्नओवर लगभग 40 लाख रुपये सालाना था। उस समय मैं लखनऊ में एक इवेंट कराने गया था। हम रात के तीन बजे वापस लौट रहे थे। तभी मैंने देखा कि कुछ बच्चे जो दिन में भीख मांगते हैं, एक जगह पर इकट्ठा थे। तभी वहां एक और व्यक्ति आया। उसने उन बच्चों से सारा रुपया ले लिया और उसके बाद कुछ रुपये उन बच्चों में बांट दिए। अगले दिन जब हम वहां गए, तो दर्जनों बच्चे भीख मांगते दिखाई दिए। बच्चों को इस तरह से देख मेरा मन अंदर से झकझोर उठा। मुझे लगा इनके लिए मुझे कुछ करना चाहिए।

मेरे दादाजी हमेशा मुझसे कहते थे, सिर्फ अपनी खुशी के लिए हर कोई जीता है, लेकिन दूसरों की खुशी के लिए बहुत कम लोग जीते हैं। इस कहावत को ही अपने जीवन में सर्वोपरि रखकर मैं देश को बाल मजदूरी और बाल भिक्षा से मुक्त करने और लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से नंगे पैर चलने लगा। सितंबर 2015 को नंगे पैर पैदल यात्रा के साथ इस मुहिम की शुरुआत मैंने अपने शहर से की। इससे मेरा हौसला बढ़ता गया। अब तक मैं सात राज्यों में करीब 12,500 किलोमीटर की पदयात्रा कर चुका हूं। मैं एक दिन में लगभग 40 किलोमीटर चलता हूं। यात्रा के दौरान मैं लोगों से बाल मजदूरी और बाल भिक्षावृत्ति खत्म करने की अपील करता हूं। एक दिन में मैं करीब 700 लोगों से बातचीत करने का लक्ष्य रखता हूं। इसके लिए स्कूल और कॉलेजों में भी जाता हूं। वहां बच्चों और लोगों को 'भीख नहीं देंगे' की शपथ दिलाता हूं, साथ ही भीख मांगने वाले बच्चों को शिक्षित करने में सहयोग देने के लिए जागरूक करता हूं। लगातार पैदल चलने के कारण कई बार लोग मुझे पागल समझ लेते हैं। पंजाब में तो एक होटल मालिक ने मुझे कमरा देने से ही मना कर दिया। कुछ लोगों ने मेरे अभियान का विरोध भी किया। उनका मानना था कि भीख देने से पुण्य मिलता है, जबकि मैं उन्हें भीख देने के खिलाफ जागरूक कर रहा था। हालांकि अब लोग मेरे अभियान को समझते हैं, और मेरा सहयोग करते हैं।

घर पर पढ़ने वाले बच्चों का खाना मां बनाती हैं और पढ़ाई-लिखाई की देखरेख मेरे पिता करते हैं।

मेरा मानना है कि हम लोग बच्चा समझ भीख तो दे देते हैं, लेकिन उसका एक छोटा-सा हिस्सा उन बच्चों के पास जाता है, बाकी का इन बच्चों से भीख मंगवाने वालों के पास। वहीं, बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब तक उसे भीख मांगने की आदत हो जाती है और भीख न मिलने पर वह अपराध की राह पर निकल पड़ता है। वर्ष 2016 में मैंने अपने घर पर ही 'घनश्याम ओली चाइल्ड वेलफेयर' ट्रस्ट की स्थापना की। इसके साथ शेल्टर हाउस भी बनाया हुआ है। मेरे प्रयास से अब तक तेरह हजार से अधिक बच्चों को विभिन्न शिक्षा केंद्रों के माध्यम से निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। साथ ही भोजन और चिकित्सा की उनकी जरूरतें भी पूरी की जा रही हैं।

घर पर पढ़ने वाले बच्चों का खाना मेरी मां बनाती हैं और उनकी पढ़ाई-लिखाई का काम मेरे पिता देखते हैं। यात्रा के दौरान मैं बच्चों को आत्मनिर्भरता के लिए तरह तरह की हैंडमेड चीजें बनाना भी सिखाता हूं। इससे बच्चे पढ़ाई के साथ व्यस्त भी रहते हैं और उनकी थोड़ी बहुत कमाई भी हो जाती है। बच्चों का भीख मांगना और श्रम करना कितना दुर्भाग्यपूर्ण होता है। स्कूल जाने की उम्र में बच्चे होटलों, ढाबों, दुकानों, घरों में श्रम कर अपने परिजनों के लिए पैसा जुटा रहे हैं। अगर समाज को बदलना है, तो सबसे पहले हमे खुद में ही बदलाव लाना होगा।

ईरान पर प्रतिबंध से उपजी चुनौती

खाड़ी में तेल के बड़े उत्पादक देशों सऊदी अरब, इराक और संयुक्त अरब अमीरात ने आपूर्ति बढ़ाने का संकेत दिया है, ताकि कीमतों में कोई उछाल न आए। इसके बावजूद क्या तेल की कीमतों को स्थिर रखना संभव है?

अवधेश कुमार

अमेरिका के ईरान से कच्चे तेल की खरीद पर लगी पाबंदी से मिली छूट दो मई को समाप्त करने के साथ ही चिंता के कई प्रश्न खड़े हो गए हैं। भारत अपनी आवश्यकता का करीब 83 प्रतिशत तेल आयात करता है। प्रतिबंध की घोषणा होने तक भारत कुल तेल आयात का लगभग 26 प्रतिशत ईरान से आयात करता था। हमारे लिए इराक एवं सऊदी अरब के बाद तीसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता ईरान ही रहा है।

अमेरिका का सीधा लक्ष्य ईरान के संपूर्ण निर्यात को बंद कराना है। अमेरिका का यह रुख कितना सही है और कितना गलत इस पर दो राय हो सकती है, पर इसके प्रभावों को लेकर नहीं। सरकार कह रही है कि आपूर्ति में संभावित कमी के मद्देनजर वैकल्पिक स्रोतों की तैयारी कर ली गई है। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक और रूस ने भारत को हर तरह का सहयोग करने का आश्वासन दिया है। सऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात ईरान विरोधी देश हैं। वे अमेरिका के साथ हैं, इसलिए वे नहीं चाहेंगे कि भारत जैसा बड़ा तेल खरीदार किसी समस्या में फंसे। दोनों देशों से हमारे संबंध बेहतर हैं। इन सबके अलावा भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारत ने पिछले कुछ सालों में कई कदम उठाए हैं। दूसरे देशों के साथ मिलकर कच्चे तेल की बड़े स्तर पर प्रसंस्करण के लिए रिफाइनरी स्थापित हो रही है। महाराष्ट्र के रत्नागिरी में ऐसा ही एक इंटीग्रेटेड रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स कॉम्प्लेक्स बनाया जा रहा है। यह रिफाइनरी हर दिन 12 लाख बैरल क्रूड ऑयल प्रोसेस करने की क्षमता रखेगी।

दूसरे देशों पर निर्भर रहने के अलावा अपने स्रोतों को मजबूत बनाने की नीति पर भी भारत काम कर रहा है। इस दिशा में सरकार ने कुछ नीतिगत बदलाव किए हैं। तेल निर्यात का अर्थव्यवस्था से सीधा संबंध होने के कारण और कई प्रश्न हमारे मन में हैं। इनमें सबसे पहला प्रश्न कीमत वृद्धि से जुड़ा है। अगर तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो महंगाई बढ़ेगी, रुपया लुढ़क सकता है, जिससे भारत को आयात के बदले ज्यादा पूंजी चुकानी होगी और शेयर बाजार भी नीचे आ सकता है, (हालांकि डॉलर में मजबूती से निर्यात में लाभ होगा) व्यापार घाटा, राजकोषीय घाटा तेजी से बढ़ेगा और कुल मिलाकर इससे विकास दर प्रभावित होगी। भारत या चीन जैसे देशों की विकास दर गिरने का असर पूरी दुनिया पर होगा। क्या तेल की कीमतों को स्थिर रखना संभव है? अमेरिकी छूट के अंत के साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ रहीं हैं। कच्चे तेल की कीमत पिछले छह महीनों के सर्वोच्च स्तर पर पहुंच चुकी है। खाड़ी में तेल के बड़े उत्पादक देशों सऊदी अरब, इराक और संयुक्त अरब अमीरात ने आपूर्ति बढ़ाने का संकेत दिया है, ताकि कीमतों में कोई उछाल न आए।

एक बड़ा प्रश्न ईरान के साथ संबंधों के भविष्य का भी है। भारत का ईरान के साथ सांस्कृतिक-राजनीतिक एवं आर्थिक संबंध काफी गहरे हैं। तेल की भूमिका इसमें छोटी है। भारत ईरान पर पूरी तरह प्रतिबंध के साथ नहीं जा सकता। भारत ने वहां काफी निवेश किया हुआ है। भारत ने वहां चाबहार बंदरगाह विकसित किया है, जिसके साथ सड़क एवं रेल मार्ग विकसित करने सहित कई परियोजनाओं पर काम कर रहा है। चीन से वहां हमारी सीधी प्रतिस्पर्धा है। वहीं अमेरिका भारत को द्विपक्षीय व्यापार में सबसे ज्यादा मुनाफा देने वाला देश है। इसलिए उसके बिल्कुल विरुद्ध जाना भी घातक होगा। भारत के समक्ष इन दोनों के साथ संतुलन साधने की चुनौती है।

खुली खिड़की

65 वर्ष से ऊपर की आबादी

दुनिया के विभिन्न देशों में बुजुर्ग आबादी बढ़ रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट बताती है कि 65 पार कर चुके लोगों की बड़ी संख्या जापान में मौजूद है।

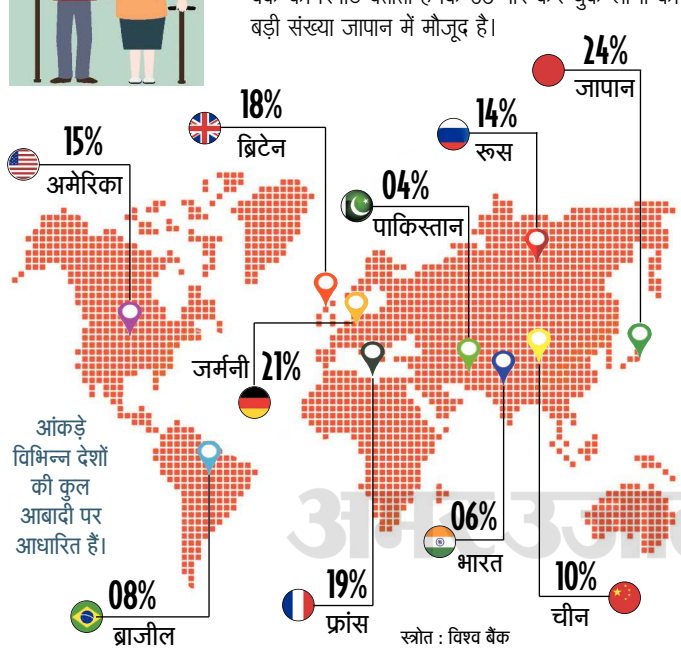

स्रोत : विश्व बैंक

पशु-पक्षियों से सीखो

गंधर्वराज विश्ववसु की पुत्री मदालसा परम तपस्वी व विद्वान महिला थीं। वे अपने पुत्रों को शास्त्रों के उदाहरण देकर उपदेश दिया करती थीं कि शरीर क्षणभंगुर है, आत्म तत्व ही सब कुछ है। सांसारिक मोहजाल में फंसकर जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। मदालसा के पति राजा ऋतुध्वज ने एक दिन कहा,'प्रिये! तुम तीन बच्चों को ज्ञानोपदेश देकर सांसारिक जगत से विरत कर चुकी हो। चौथे पुत्र अलर्क को तो राजधर्म के उपदेश दो, जिससे वह हमारे वंश को आगे बढ़ा सके।' मदालसा ने पति का आदेश शिरोधार्य कर अलर्क को शिक्षा देनी शुरू कर दी। एक दिन मदालसा ने कहा, 'पुत्र, हम पशु-पक्षियों के जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। कौवे से आलस्य रहित रहने की शिक्षा लेनी चाहिए। भौंरों से रसग्राही और मृग से सदा चौकन्ना रहने की सीख लेनी चाहिए। जैसे सर्प फन फैलाकर, फुंफकारकर अपनी रक्षा के लिए दूसरों को डराता है, उसी प्रकार राजा को शत्रु को डराकर रखना चाहिए। राजा को हंस के समान नीर-क्षीर विवेक करने वाला होना चाहिए। उसे सूर्योदय से पहले उठकर कर्तव्यपालन में लग जाना चाहिए।' उन्होंने अपने बेटे को सभी के साथ समान व्यवहार करने की शिक्षा देते हुए कहा, 'जैसे चंद्रमा और सूर्य सर्वत्र समान रूप से अपनी ऊर्जा का प्रसार करते हैं, वैसे राजा को समानता का व्यवहार करना चाहिए। वही राजा अमर होता है, जो प्रजा के हित व कल्याण को सर्वोपरि महत्व देता है।'

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

प्रोफेसर, नोट और सफलता

प्रोफेसर अंबुज नाथ की कहानी, जिसने बच्चों को उनका मोल बताया।

आईआईटी के प्रोफेसर अंबुज नाथ ने फैसला किया कि वह बारहवीं के फेल बच्चों को कोचिंग देकर आईआईटी में दाखिले के लिए तैयार करेंगे। उनके सभी दोस्तों ने उनका खूब मजाक उड़ाया, क्योंकि टॉपर बच्चों के लिए भी आईआईटी की परीक्षा निकाल पाना आसान नहीं होता। पर प्रोफेसर ने कोचिंग की शुरुआत की और पहले बैच में उन्हें 17 बच्चे मिले। पहले ही दिन उन्होंने छात्रों से पूछा कि खुद को कितना महत्वपूर्ण समझते हैं? किसी छात्र ने हाथ नहीं उठाया। फिर प्रोफेसर ने जेब से 500 रुपये का एक नोट निकाला और छात्रों से पूछा, आपमें से कितने लोग इसे लेना चाहेंगे? सभी बच्चों ने हाथ खड़े कर दिए। प्रोफेसर ने नोट को गीली मिट्टी से भरे एक मग में डाल दिया और वहां से उस गंदे नोट को निकालकर पूछा, अब कितने लोग इसे लेना चाहेंगे? फिर सभी ने हाथ खड़ा कर दिया। अब प्रोफेसर ने नोट जमीन पर फेंककर उसे पैर से मसल दिया। फिर उसे उठाकर पूछा, अब इसे कौन लेना चाहेगा? सबने नोट की तरफ देखकर मुंह बनाया, लेकिन एक बार फिर सबने हाथ खड़े कर दिए। प्रोफेसर ने कहा, देखा, नोट चाहे मिट्टी में सना हुआ हो, चाहे कितना भी दबा-कुचला हुआ हो, उसकी कीमत कभी कम नहीं होती। ठीक इसी तरह से हमें भी यह पहचानना चाहिए कि हमारी कीमत क्या है। एक बार अगर हम अपना मोल समझ जाएं, तो हमारे प्रयास, हमारी मानसिकता, हमारे कर्म सब उसी के रंग में ढल जाएंगे। कई बार विपरीत परिस्थितियों में हम अपना आत्मविश्वास खो देते हैं। लेकिन उस वक्त अगर हम यह याद रखें कि हमारा मोल इससे बहुत ऊपर है, तो हमारे प्रयास और मानसिकता वापस हमें खींचकर उस जगह पहुंचा देगी, जिसके हम योग्य हैं। प्रोफेसर अंबुज की उस क्लास के 11 बच्चों का चयन आईआईटी में हुआ।

हमारी योग्यता का एक महत्वपूर्ण आकलन हमारी सोच है।